राजस्व या लोक वित्त

करो के प्रकार

TYPES OF TAXES

करों को अलग अलग वर्गों में बांटा गया है:-

- अनुपातिक, प्रगतिशील, प्रतिगामी एवं अधोगामी करें।
- व्यक्तिगत कर एवं अव्यक्तिगत कर।
- परिमाण तथा मूल्य कर।
- प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कर।

आनुपातिक, प्रगतिशील, प्रतिगामी एवं अधोगामी कर

अनुपातिक कर (Proportional Tax)

वह कर जो आय के अनुपात में लगाया जाता है अर्थात
प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय का एक निश्चित अनुपात कर के रूप में चुकाना पड़ता है।
यहाँ निर्धन तथा धनी दोनों वर्गों के लिये समान होता है।

अनुपातिक कर सब आयो पर एक निश्चित दर से वसूल किया जाता है।
आय के घटने या बढ़ने पर इन दरों में कोई परिवर्तन नहीं होता है।
जैसे

कर आधार ₹	कर दर	कर राशि ₹
1000	10%	100
2000	10%	200
5000	10%	500
10000	10%	1000

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@dhalinakul*

www.theeconomicsguru.com

अनुपातित कर के लाभ

1. इसमें सरलता का गुण पाया जाता है तथा प्रत्येक व्यक्ति आसानी से अनुमान लगा सकता है कि उसे कितना कर चुकाना है।
2. इस प्रकार का कर समाज के उत्पादन के वितरण पर कोई प्रभाव नहीं डालता है।
3. सैद्धांतिक दृष्टिकोण से उपयुक्त है।

अनुपातिक करके दोष

सामाज की प्रणाली के अनुसार आनुपातिक कर उपयुक्त नहीं है क्योंकि यह निर्धन एवं धनी वर्ग दोनों पर एक समान कर भार डालता है।

प्रगतिशील कर (Progressive Tax)

वह कर जो आय वृद्धि के साथ साथ कर की दर में भी वृद्धि होती चली जाती है उसे प्रगतिशील करते हैं।

अर्थात, *कर आमदनी के साथ साथ बढ़ती चली जाती है।*

आय से परिवर्तन होने के साथ साथ प्रगतिशील करो की दरों में भी परिवर्तन आता है।

इस प्रकार धनी लोगो पर इस कर का अधिक भार पड़ता है, जबकि निर्धन वर्गों पर अपेक्षाकृत कम भार पड़ता है।

उदाहरण:

कर आधार ₹	कर दर	कर राशि ₹
1000	10%	100
2000	15%	300
5000	20%	1000
10000	30%	3000

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

लाभ

- यह समाज में उत्पादन के वितरण में न्याय लाता है।
- आर्थिक असमानताओं में कमी होती है, क्योंकि उच्च आय वालों से अधिक कर वसूल करके निर्धन वर्ग पर व्यय किया जाता है।
- यह समानता तथा न्यायशीलता के सिद्धांत पर आधारित है।

प्रगतिशील करके दोष

यह कर अन्यायपूर्ण माना जाता है। क्योंकि *जो व्यक्ति त्याग तथा तपस्या से आय प्राप्त करते हैं और पूंजी का संचय करते हैं, उन पर अधिक आर्थिक दंड लगाया जाता है।* जबकि जिनकी आय कम होती है या मौज मस्ती करते हैं, उन पर कर भार बहुत ही कम या न के बराबर होता है।

प्रतिगामी कर (Regressive Tax)

प्रतिगामी कर प्रणाली प्रगतिशील कर प्रणाली की बिल्कुल उल्टी होती है।

प्रतिगामी कर वे कर होते हैं, जिनकी दर आय वृद्धि के साथ साथ घटती चली जाती है। इस प्रकार के करों का भार धनी वर्ग की अपेक्षा निर्धन वर्गों पर अधिक पड़ता है, जो समाज में न्याय संगत नहीं कहा जा सकता।

यदि ऐसी वस्तुओं पर कर लगाया जाता है जिसे धनी वर्ग की अपेक्षा निर्धन वर्ग के अधिक उपयोग करते हैं तो इसको प्रतिगामी कर कहेंगे।

जैसे भारत में नमक पर लगाया गया कर प्रतिगामी कर था।

उदाहरण

कर आधार ₹	कर दर	कर राशि ₹
1000	10%	100
2000	8%	160
5000	5%	250
10000	3%	300

THE ECONOMICS GURU
NOWLEDGE

लाभ

- यह कर मादक पदार्थों पर रोक लगाने में सहायक है।
- इन कारों को विलासिता की वस्तुओं पर लगाने से गरीब लोग इन वस्तुओं का उपयोग नहीं करेंगे और उनकी बचते बढ़ेंगी।

दोष

प्रतिगामी कर का भार अपेक्षाकृत गरीब लोगों पर अधिक होता है।

अधोगामी कर (Degressive Tax)

यह अनुपातिक कर एवं प्रगतिशील कर का मिश्रण होता है। यह कर बहुत प्रगतिशील होते हैं और आय व्यक्ति के साथ साथ बहुत मंद गति से बढ़ते हैं। *इस प्रकार कार्यप्रणाली में धनी पर अपेक्षाकृत कम भार पड़ता है। जिनका त्याग उन्हें करना चाहिए उतना नहीं करते हैं।*

उदाहरण

कर आधार ₹	कर दर	कर राशि ₹
1000	8%	80
2000	9%	180
5000	10%	500
10000	12%	1200

लाभ

- इस कर से पूंजी के निर्माण पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।
- अधोगामी कर प्रगतिशील प्रतिगामी दोनों करों की विशिष्टताओं का सम्मिश्रण है।

दोष

इस कर से अधिकतम सामाजिक कल्याण नहीं हो सकता।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

व्यक्तिगत कर एवं व्यक्तिगत कर

सरकार के द्वारा कुछ कर ऐसे लगाये जाते हैं जिन्हें निजी व्यक्ति को चुकाने पड़ती है, जैसे तीर्थ स्थानों पर, पहाड़ी क्षेत्रों में मंदिर में प्रवेश, अजायबघर एवं चिड़िया घर को देखने के लिए सरकार द्वारा कुछ कर लगा दिया जाते है, जो प्रत्येक व्यक्ति के चुकाने पड़ते हैं, *उसे व्यक्तिगत कर* के नाम से जाना जाता है।

जबकि सरकार द्वारा वस्तुओं के उत्पादन, वितरण एवं विक्रय पर कुछ कर लगा दी जाती हैं, जिसके फलस्वरूप वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हो जाती है। इसे अव्यक्तिगत कर (Impersonal Tax) कहते हैं।

परिमाण तथा मूल्य कर

वह कर जो वस्तुओं की मात्रा के आधार पर लगाए जाते हैं अर्थात वस्तुओं की प्रति इकाई कीमत पर लगाया जाता है, इसे **परिमाण कर (Specific Tax)** कहते हैं।

उदाहरण के लिए साबुन की प्रति टिक्की के विक्रय पर पैसे का कर लगाया जाता है तो उसे **परिमाण** कर के नाम से जाना जाता है।

यदि सरकार करदाता पर इकट्ठी राशि के रूप में कर लगा देती है तो वह **मूल्य कर (Advolern Tax)** कहते हैं।

जैसे, सरकार द्वारा साबुन उद्योग से कुल ₹50,000 कर के रूप में आय प्राप्त करती है, तो वह मूल्य कर के अंतर्गत आती है।

प्रत्यक्ष कर तथा अप्रत्यक्ष कर

प्रत्यक्ष कर (Direct Tax)

वे कर जो सरकार द्वारा लगाये जाते है उसे उस व्यक्ति को स्वयं वहन करना पड़ता है जिस पर यह लगाया जाता है जैसे आयकर संपत्ति कर आदि।

इन करों को किसी अन्य व्यक्ति पर टाला नहीं जा सकता है।

प्रत्यक्ष कर के गुण

- मितव्ययता
- निश्चितता
- समानता
- लोच
- न्यायपूर्ण
- असमानता में कमी
- सामाजिक जागृति

प्रत्यक्ष करों के दोष

- असुविधाजनक
- करों का विरोध
- करों को छिपाए जाने की संभावना
- अन्याय की संभावना
- निम्न आय वर्ग को विशेष चोट

अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax)

वह कर होता है जो दूसरे व्यक्तियों के हस्तांतरित किया जा सके। जिससे व्यक्ति पर लगाया जाता है उस व्यक्ति के स्वयं सहन नहीं करना पड़ता।

जैसे, वस्तु एवं सेवाकर, मनोरंजन कर आदि।

अप्रत्यक्ष करों के गुण

- अप्रत्यक्ष करों को चुकाना सुविधाजनक होता है।
- इन कारों में लोच का गुण पाया जाता है।
- इन करों को छिपाया नहीं जा सकता।
- इन कारों का क्षेत्र विस्तृत होता है।
- सामाजिक कल्याण में वृद्धि होती है

अप्रत्यक्ष करों के दोष

- निर्धन व्यक्तियों पर कर का अधिक भार।
- बचत निरुत्साहित होती है।
- अनिश्चितता बनी रहती है।
- अपव्यय होता है।
- जनजागृति में कमी आती है।

करारोपण के प्रभाव
Effects of Taxation

अपने व्यय की पूर्ति हेतु जब सरकार कर लगाती हैं तो सरकार को इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि इन करों का क्या आर्थिक प्रभाव पड़ता है?

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री न्यूनतम करारोपण के पक्ष में थे क्योंकि वे सरकार द्वारा अहस्तक्षेप की नीति में विश्वास रखते थे।

आधुनिक समय में करारोपण को आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक आवश्यक औजार माना जाता है। इसका कारण यह है कि कर का देश के उत्पादन व्यवस्था, वितरण, आर्थिक स्थिरता आदि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

करारोपण के प्रभाव ***प्रतिकूल एवं अनुकूल*** दोनों प्रकार के हो सकते हैं।
अतः करारोपण इस प्रकार किया जाना चाहिए जिससे अनुकूल प्रभाव को अधिक किया जा सके।

डाल्टन के शब्दों में "आर्थिक दृष्टि से सर्वोत्तम कर पद्धति वह है, जिसके अच्छे प्रभाव अधिक एवं न्यूनतम बुरे आर्थिक प्रभाव पड़े"।

डाल्टन ने करारोपण के प्रभावों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया-

- उत्पादन पर प्रभाव
- वितरण पर प्रभाव
- करारोपण के अन्य प्रभाव

करारोपण के उत्पादन पर प्रभाव

डाल्टन के अनुसार, करारोपण के उत्पत्ति पर तीन प्रकार के प्रभाव होता है-

- कार्य करने और बचत करने की योग्यता पर प्रभाव
- कार्य करने और बचत करने की इच्छा पर प्रभाव

- आर्थिक साधनों के हस्तांतरण पर प्रभाव

कार्य करने और बचत करने की योग्यता पर प्रभाव

➢ **कार्य करने की योग्यता पर प्रभाव**

कर लगाए जाने के फलस्वरुप करदाता अपनी एक निश्चित आय से वंचित हो जाता है। इससे *करदाता की क्रय शक्ति कम हो जाती है।* अधिक करदाता को कर भुगतान के कारण अपने अनिवार्य आंतरिक आवश्यकता की कटौती करनी पड़ती है तो इसका उसकी कार्य की शक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

➢ **बचत करने की योग्यता पर प्रभाव**

प्राय: सभी प्रकार के कर का बचत करने की योग्यता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। *इसका कारण यह है कि कर लगाने से करदाताओं की क्रय शक्ति कम हो जाती है और वे बचत नहीं कर पाते।*

कार्य करने और बचत करने की इच्छा पर प्रभाव

➢ **कार्य करने की इच्छा पर प्रभाव**

जहाँ तक का व्यक्ति की कार्य करने की इच्छा पर प्रभाव का प्रश्न है, इसके लिए दो बातों का ध्यान रखना होगा-

कर की प्रकृति एवं कर के प्रति व्यक्ति विशेष की प्रतिक्रिया

कर की प्रकृति - अलग अलग प्रकार के करों का कार्य करने की इच्छा पर विभिन्न प्रकार का प्रभाव होता है। जो कर अनायास प्राप्त होने वाले अथवा साधारण लाभ पर लगाए जाते हैं। उनका कार्य करने की इच्छा पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

कर के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया भी उसे कार्य करने की इच्छा को प्रभावित करती है।

प्रो. डाल्टन के अनुसार, "किसी भी व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया उसे आय के लिए मांग की लोच जो वह अपने आय प्राप्त करने के लिए प्रयत्न तथा त्याग के रूप में करता है के द्वारा निर्धारित होता है"।

➢ **बचत करने की इच्छा पर प्रभाव**

सामान्य रूप से करारोपण का बचत करने की इच्छा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसका कारण यह है कि कर लगने से अथवा वस्तुओं के मूल्य बढ़ने से लोग अपनी

वर्तमान उपभोग में कमी ना करके प्राय: अपनी बचत में कमी करते हैं किंतु यदि लोग भविष्य के प्रति सजग रहते हैं तो ऐसी स्थिति में लोग कुछ न कुछ मात्रा में अपने उपभोग में कटौती करके तथा भविष्य के लिए बचत करते हैं।

प्रो. डाल्टन के अनुसार, "करारोपण व्यक्तिगत बचत और विनियोग दोनों को हतोत्साहित कर सकता है"।

आर्थिक साधनों के स्थानांतरण पर प्रभाव

करारोपण के फलस्वरूप उत्पत्ति के साधनों का हस्तांतरण भी होता है। इससे उत्पत्ति की मात्रा ही नहीं वरन उसकी संरचना भी प्रभावित होती है।

जब सरकार इन उत्पादन पर कर लगाती है तो संबंधित वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि हो जाती है। इसके फलस्वरूप मांग में कमी होती है और संबंधित उत्पादों का लाभ भी घटने लगता है। अत: ***पूंजी एवं विनियोग ऐसे उत्पादन से हटकर की ओर प्रभावित होने लगते हैं जहाँ कर नहीं लगते अथवा करो की मात्रा बहुत कम होती है।***

साधनों का स्थानांतरण किस दिशा में होगा संबंधित वस्तुओं की मांग और पूर्ति के लोज पर निर्भर करता है। जो निम्न प्रकार हो सकता है-

- सामाजिक कल्याण की दिशा में
- सामाजिक कल्याण के प्रतिकूल व हानिकारक
- वर्तमान उपयोग से भविष्य के उपयोग को स्थानांतरित
- एक स्थान से दूसरे स्थान पर हस्तांतरण

करारोपण के वितरण (DISTRIBUTION) पर प्रभाव

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

करारोपण का वितरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। कुछ कर देश में असमानता को बढ़ाते हैं तथा कुछ कर आय और संपत्ति की असमानता को कम करते है।

प्रो. डाल्टन के अनुसार, "अन्य बातें सामान्य रहने पर करारोपण की वह प्रणाली श्रेष्ठ है यदि करारोपण द्वारा धनी वर्ग पर ऊंचे और प्रगतिशील कर लगाए जाते हैं तथा इस प्रकार एकत्रित राशि का प्रयोग निर्धन वर्ग की आवश्यकता की संतुष्टि के लिए किया जाता है तो कुल सामाजिक कल्याण में वृद्धि होती है"।

सामान्य रूप से प्रत्यक्ष कर आय तथा संपत्ति की असमानता को कम करते है जबकि अप्रत्यक्ष करों का ऐसा कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

करारोपण के अन्य प्रभाव

- **उपभोग पर प्रभाव**

करों का उपभोग पर भी प्रभाव पड़ता है। आय पर लगाए जाने वाले कर करदाता की क्रय शक्ति को कम कर देते हैं। यदि वह कर तुलनात्मक रूप से निर्धन वर्ग पर लगाए जाते हैं तो उनके जीवन स्तर पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि *निम्न आय वर्ग के प्रत्यक्ष करों से मुक्त रखा जाता है।*

- **आर्थिक स्थिरता पर प्रभाव**

बहुत से अर्थशास्त्रियों का मत है कि करारोपण का मुख्य उद्देश्य देश में आर्थिक स्थिरता स्थापित करना होना चाहिए तथा करारोपण से धन प्राप्ति के उद्देश्यों को कम महत्त्व दिया जाना चाहिए।

इस संबंध में प्रो. लर्नर का मत है कि करारोपण का एकमात्र उद्देश्य आर्थिक स्थिरता लाना होना चाहिए।

करों का उपभोग और विनियोग पर प्रभाव पड़ता है जो देश की आर्थिक स्थिरता को प्रभावित करते हैं।

मुद्रा प्रसार एवं आर्थिक मंदी में करों की भूमिका

मुद्रा प्रसार (INFLATION)

मुद्रा प्रसार के समय लोगों के हाथ में अधिक क्रय शक्ति रहती है। जिससे वस्तुओं की मांग बढ़ती है और इसके मूल्यों में वृद्धि होती है।
ऐसी स्थिति में करारोपण का उद्देश्य यह बनी हुई क्रय शक्ति कम करना होना चाहिए एवं वर्तमान करो की दरों में वृद्धि करके नए कर लगाकर इस उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।

मंदी (Deflation)

जब अर्थव्यवस्था में मंदी अथवा मुद्रा संकुचन की स्थिति होती है तो ऐसे समय में नये कर नहीं लगाए जाने चाहिए क्योंकि इनसे लोगों की क्रयशक्ति कम होती है और

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

विनियोग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। *मंदी के समय राजकोषीय व्यय राजकोषीय में वृद्धि का समर्थन किया जाना चाहिए और करों की मात्रा में कमी की जानी चाहिए।*

- **<u>रोजगार प्रभाव</u>**

यदि करारोपण द्वारा विनियोग और उत्पादन में वृद्धि होती है तो रोजगार के स्तर में भी वृद्धि होती है। यदि करारोपण से आर्थिक स्थिरता में वृद्धि होती है तो उसकी साथ ही रोजगार रोजगार भी बढ़ता है।

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।
इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यादा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।
किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद
नकुल ढाली
The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my YOUTUBE channel THE ECONOMICS GURU

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@dhalinakul*

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE